टिप्पणी

1

ग्रंथालय और उसके उद्देश्य

परिचय

आप अपने विद्यालय या आसपास के क्षेत्र के ग्रंथालय में गए होंगे। क्या आपने कभी सोचा है कि ये कैसे कार्य करते हैं तथा इनके घटक कौन से हैं। ग्रंथालय की अवधारणा, उत्पत्ति, विकास व कार्यो में अभूतपूर्व परिवर्तन हुआ है। वर्तमान समाज मुख्यरूप से पुस्तकों, ग्राफिक सामग्री और मुद्रित/अमुद्रित सामग्री पर निर्भर है। इस पाठ में हम ग्रंथालय की उत्पत्ति, उद्देश्य और कार्यो के बारे में अध्ययन करेंगे।

उद्देश्य

इस पाठ को पूरा करने के पश्चात् आप सक्षम होगें:

- ग्रंथालय को परिभाषित करने;
- ग्रंथालय के उद्देश्य एवं कार्यो को समझने;
- शिक्षा और समाज में ग्रंथालय की भूमिका पहचानने; और
- सूचना युग में ग्रंथालयों के बदलते परिवेश की व्याख्या करने में।

1.1 ग्रंथालय की परिभाषा

लाइब्रेरी शब्द की व्युत्पत्ति लैटिन शब्द लिब्रेरिया से हुई जिसका अर्थ पुस्तक रखने का स्थान। यह लिबर शब्द से आया जिसका अर्थ होता है ''पुस्तक''। टॉम मैक ऑर्थर द्वारा संपादित ऑक्सफोर्ड कंपेनियन टू इंगलिश लैंग्वेज के अनुसार ग्रंथालय पुस्तकों, पत्रिकाओं या अन्य सामग्री मुख्य रूप से लिखित और मुद्रित का संग्रह है। हैरॉड्स लाइब्रेरियन्स ग्लॉसरी एण्ड रेफ्रेंस बुक के अनुसार ग्रंथालय:

1. जहाँ ग्रंथों और अन्य साहित्यिक सामग्री का संग्रह अध्ययन और संदर्भ के लिए रखा जाता है।

टिप्पणी

2. ऐसा स्थान, भवन, कमरा या विशेष कक्ष जहाँ उपयोग के लिए ग्रंथों के समूह को रखा जाए।

3. किसी एक प्रकाशक द्वारा व्यापक आख्या के अंतर्गत प्रकाशित पुस्तकों का सेट जैसे ''लोएब क्लासिक लाइब्रेरी''। ऐसे सेट के प्रत्येक ग्रंथ में कुछ सामान्य विशेषताएँ होती हैं जैसे विषय, जिल्द या मुद्रण।

4. फिल्मों–छायाचित्रों तथा अन्य पुस्तकेतर सामग्रियों, प्लास्टिक या धातु के टेप या डिस्क या प्रोग्राम का संग्रह।

किसी एक बड़े ग्रंथालय के अलग–अलग विभागों में अलग–अलग प्रकार की सामग्रियाँ जैसे पाण्डुलिपि, मुद्रित ग्रंथ के संग्रह हो सकते हैं, या किसी विशेष ग्रंथालय में इनमें से केवल किसी एक प्रकार की सामग्री का संग्रह भी हो सकता है।

पियर्स बटलर ने 'ग्रंथालय' को एक सामाजिक संस्था माना है। उनके विचार में यह सामाजिक संरचना की अनिवार्य इकाई है, जिसके द्वारा ग्रंथो, चित्रों तथा ध्वनि जनित सामग्रियों के माध्यम से समाज के संचित अनुभवों को समाज के व्यक्तिगत सदस्यों तक संप्रेषित किया जाता है।

डॉ. एस.आर. रंगनाथन – भारत के ग्रंथालय विज्ञान के जनक, ने ग्रंथालय की व्याख्या इस प्रकार की है–

''ग्रंथालय ऐसी सार्वजनिक संस्था या प्रतिष्ठान है जिसका दायित्व और कर्त्तव्य ग्रंथालय संग्रह की देखभाल करना तथा इन्हें उन लोगों को उपलब्ध कराना है जिनकी इन्हें आवश्यकता है।''

इस प्रकार उपर्युक्त परिभाषाओं से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि ग्रंथालयों में मानव विचारों के अभिलेखों का सुव्यवस्थित समूह होता है इन अभिलेखों के भौतिक स्वरूपों में पाण्डुलिपि, पुस्तकें, पत्रिकाएँ, ग्राफ, माइक्रोफिल्म, चार्ट आदि है। इन अभिलेखों की व्यवस्था एवं सुरक्षा की जाती है जिससे भविष्य में उपयोगकर्ता द्वारा इनका प्रभावपूर्ण ढंग से उपयोग किया जा सके।

पाठगत प्रश्न 1.1

रिक्त स्थानों की पूर्ति करें :

1. पियर्स बटलर ने ग्रंथालयों को.....माना है।

2. ग्रंथालय.....के अभिलेखों का सुव्यवस्थित संग्रह है।

आइए, अब ग्रंथालयों के उद्देश्यों व कार्यो को भी समझें–

1.2 ग्रंथालय के उद्देश्य एवं कार्य

ग्रंथालय की आवश्यकता उसके निम्नलिखित उद्देश्यों व कार्यो द्वारा समझी जा सकती है।

टिप्पणी

1.2.1 ग्रंथालय स्थापित करने का उद्देश्य है मानव के विचारों, भावनाओं और अभिव्यक्ति से संबंधित अभिलेखों को सबके लिये उपलब्ध कराना:

1.2.2 ग्रंथालयों के कार्य निम्नलिखित है:-

- पुस्तकों व अन्य पुस्तकेतर सामग्री का संग्रह व उसे उपलब्ध कराना ताकि लोग स्वतंत्र रूप से सोच सकें व कार्य कर सकें। इस प्रकार वे अपने रचनात्मक तथा आलोचनात्मक क्षमताओं और मूल्यांकन-क्षमता का विकास करने में सक्षम होते हैं।
- ज्ञान, शिक्षा और संस्कृति के विकास और विस्तार में वृद्धि करना;
- समाज के सभी व्यक्तियों को आजीवन औपचारिक और अनौपचारिक स्व-शिक्षण की सुविधा उपलब्ध कराना।
- मानवजाति की साहित्यिक और सांस्कृतिक विरासत को भावी पीढ़ी के लिए सांस्कृतिक व अनुसंधान सामग्री के साधन के रूप में संरक्षण प्रदान करना;
- उपयोगकर्ताओं को आयु, जाति, रंग, धर्म, लिंग आदि के भेदभाव बिना विश्वसनीय सूचनाएँ उपलब्ध कराना;
- सारांश में, उपर्युक्त कार्यों को ध्यान में रखते हुए ग्रंथालय के कार्यो को प्राय: चार क्षेत्रों में समूहबद्ध किया जा सकता है:

(क) शिक्षा

ग्रंथालय शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर व्यक्ति और समूह के आत्मविश्वास के लिए सुविधाएँ उपलब्ध कराता है। अभिलिखित ज्ञान और व्यक्ति के बीच की दूरी को कम करता है। शैक्षणिक केंद्र के रूप में ग्रंथालय सभी प्रकार की शिक्षा जैसे औपचारिक/अनौपचारिक पाठ तथा जीवनपर्यन्त विकास की शिक्षा में सहायक होते है। इस शिक्षा की प्राप्ति समुदाय के लिए ग्रंथों और अन्य पाठन सामग्री के संग्रहण द्वारा की जाती है।

(ख) सूचना

ग्रंथालय प्रत्येक व्यक्ति और समूह के लिए उसकी रुचि और आवश्यकता के अनुसार सही अद्यतन सूचना उपलब्ध कराता है। आज सूचना सेवाओं का क्षेत्र व्यापक हो गया है जिसमें समाज की सामाजिक आर्थिक आवश्यकताएँ भी शामिल हो गई हैं। ग्रंथालय विशिष्ट सूचना स्रोतों से सूचना उपलब्ध कराने के लिए एक सूचना केन्द्र या निर्देशात्मक केन्द्र के रूप में कार्य करता है। रोज़गार के अवसर, जन उपयोगी सेवाएँ, सामाजिक चेतना कार्यक्रम आदि तथा सामाजिक विकास से संबंधित विभागों द्वारा संचालित कार्य सूचना के आवश्यक क्षेत्र हैं। ग्रंथालय इन क्षेत्रों की सूचनाओं का संकलन सामान्य जन को प्रसारित करने हेतु करता है।

(ग) संस्कृति

ग्रंथालय सांस्कृतिक जीवन का मुख्य केंद्र है और यह जीवन और सहभागिता, मनोरंजन व

टिप्पणी

समस्त कलाओं को प्रोत्साहित करता है। सांस्कृतिक विकास के दो पक्ष हैं प्रथम पठन-पाठन और चिंतन, जिसके द्वारा व्यक्ति के मानसिक स्तर में वृद्धि करना और उसकी सृजनात्मक प्रतिभा का विकास करना। दूसरा ग्रंथालय विस्तारित गतिविधियों, जैसे व्याख्यान, संगोष्ठी, परिचर्चा, पुस्तक प्रदर्शनी, सांस्कृतिक सम्मेलन आदि का आयोजन कर समाज की सांस्कृतिक समृद्धि में योगदान करना।

(घ) मनोरंजन

ग्रंथालय अवकाश के समय का सकारात्मक उपयोग करने के लिए पाठ्य-सामग्री उपलब्ध कराते हुए परिवर्तन एवं विश्रांति प्रदान करने का काम करता है। खाली समय का स्वस्थ एवं सकारात्मक उपयोग करवाना ग्रंथालय का एक महत्त्वपूर्ण कार्य है। उपन्यास, पत्र-पत्रिकाएँ, समाचार पत्र एवं अन्य सामग्री मनोरंजनात्मक पठन की सुविधा प्रदान करते है। दृश्य-श्रव्य सामग्री जैसे फिल्म, टेलिविज़न, रेडियो, आडियो वीडियो कैसेट सार्वजनिक ग्रंथालय के उपयोग को बढ़ाते हैं। विविध प्रकार की कार्यक्रम आयोजन करके ग्रंथालय को वास्तविक रूप में सामुदायिक केन्द्र बनाया जा जा सकता है।

गतिविधि 1.1 : छात्रों को ग्रंथालय में ले जाएँ ताकि वे वहाँ के वातावरण, पुस्तक-संग्रह तथा उनके द्वारा दी जाने वाली विभिन्न सेवाओं से परिचित हो सकें।

पाठगत प्रश्न 1.2

सही विकल्प चुनें :

1. ग्रंथालय समाज में लोगों को औपचारिक/अनौपचारिक, जीवनपर्यंत शिक्षा देने में सहायक नहीं होते है।
2. ग्रंथालय विशिष्ट सूचना स्त्रोतों से सूचना उपलब्ध कराने की दृष्टि से एक सूचना केन्द्र या निर्देशात्मक केन्द्र के रूप में कार्य करता है।
3. ग्रंथालय अवकाश के समय का सकारात्मक उपयोग कराने के लिए पाठ्य-सामग्री उपलब्ध कराते हुए परिवर्तन एवं विश्रांति की भूमिका अदा करता है।

1.3 ग्रंथालयों की समाज एवं शिक्षा में भूमिका

आइए अब हम ग्रंथालयों की समाज एवं शिक्षा की भूमिका को समझें–

1.3.1 ग्रंथालय एक सामाजिक संस्था के रूप में

समाज के सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक तथा शैक्षिक विकास में ग्रंथालय महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं। ग्रंथालय सेवा संस्कृति, जीवन के पारस्परिक सहयोग व समाज के नियमित विकास के लिए आवश्यक मानी गयी है। एक सामाजिक संस्था के रूप में

टिप्पणी

ग्रंथालय निम्नलिखित उद्देश्यों की पूर्ति करता है:

(i) आजीवन स्व-शिक्षा प्राप्त करने में प्रत्येक व्यक्ति की सहायता करना;

(ii) प्रत्येक व्यक्ति को सभी विषयों पर नवीनतम तथ्य एवं सूचना उपलब्ध कराना;

(iii) बिना किसी भेदभाव के और संतुलित रूप में सभी के लिए अभिलिखित विचारों को उपलब्ध कराना।

(iv) अवकाश के निर्दोष और औदात्यपूर्ण उपयोग के लिए अवसर उपलब्ध करना।

(v) प्राचीन काल से संबंधित विषयों पर शोध करने के लिए मानव जाति की साहित्यिक धरोहर का परीक्षण करना।

(vi) समाज के अभिलिखित विचारों का संरक्षण करने वाली प्रमुख एजेंसी के रूप में समाज कल्याण के लिए कार्य करना।

(क) सांस्कृतिक स्तर को समुन्नत करने के लिए ग्रंथालय

ग्रंथालय समाज में जन सामान्य की बुद्धि, ज्ञान और सामाजिक स्तर को ही नहीं बढ़ाते, बल्कि समाज में सामान्य व्यक्ति के सामान्य ज्ञान को भी बढ़ाते है। ग्रंथालय पठन रुचि का विकास करते है और व्यक्ति के मानसिक स्तर को बढ़ाकर उसके पढ़ने की रुचि में भी परिवर्तन लाते है।

ग्रंथालय समाज की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए अध्ययन सामग्री का प्रबन्ध करते है तथा पाठक को जीवन के प्रत्येक क्षेत्र से संबंधित शोध कार्य हेतु सहायता प्रदान करते हैं तथा समाज के सभी वर्ग के लिए उनके महत्व की सूचना उपलब्ध कराने में सहायक होते है।

(ख) ग्रंथालय सुसंस्कृत नागरिक बनाने का साधन

एक सुसभ्य समाज से यह अपेक्षा की जाती है। कि उसका प्रत्येक नागरिक शिक्षित हो और पूर्णत: सामाजिक मूल्यों, शिक्षा और ग्रंथालय के महत्व तथा उसके उपयोग प्रति सचेत और उससे अवगत हो। एल.जे. जास्ट का विचार है कि ''जहाँ कहीं भी सभ्यता है वहाँ ग्रंथ अवश्य होंगे और जहाँ ग्रंथ होगें वहाँ ग्रंथालय अवश्य होंगे।'' ग्रंथालय अपनी प्रकृति, विशेषता एवं सेवाओं के विस्तार द्वारा एक अच्छे समाज के निर्माण में सहायक होते हैं। यह व्यक्ति के सभी प्रकार के शैक्षिक विकास में सहायता करता है। प्रत्येक उपयोगकर्ता को पाठन-सामग्री को प्रचुर मात्रा में उपलब्ध कराके उनके विचार व दृष्टिकोण को सक्षम बनाने में सहायता करता है। किसी भी लोकतन्त्र की सफलता उसके शिक्षित व प्रबुद्ध नागरिकों पर निर्भर करती है न कि उनके सामाजिक स्तर पर। एक शिक्षित और परिष्कृत नागरिक ही सही व गलत का निर्णय ले सकता है। यह उपयोगकर्ताओं की बुद्धि को जागृत करके उनकी समस्याओं का उचित ढंग से हल करने में सहायता करता है।

टिप्पणी

(ग) ग्रंथालय पुस्तकों के प्रति रुचि को प्रोत्साहित करता है

एक सामाजिक संस्था होने के कारण ग्रंथालय न केवल पाठकों को पुस्तकें प्रदान कर उन्हें सन्तुष्ट करने का प्रयास करते हैं बल्कि उनमें पुस्तकों का उपयोग करने की आकांक्षा तथा माँग की प्रवृत्तियों को भी प्रोत्साहित करते हैं। लोगों में अध्ययन की प्रवृत्तियों और पाठकों को ग्रंथालयोन्मुख बनाने में, और लोगों के मन में पुस्तकों के प्रति प्रेम उत्पन्न करने में सहायक होते हैं। पुस्तकों की माँग की पूर्ति के लिए ग्रंथालय वांछित पुस्तकों को सुलभ करने के सभी प्रयासों का अनुसरण करते हैं। इस प्रकार ग्रंथालय समाज के सामाजिक जीवन में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं। ग्रन्थालयों में पाठ्य सामग्री के संकलन की वृद्धि पाठकों द्वारा माँग की जाने वाली पुस्तकों के द्वारा सम्भव होती है। अत: समाज में और सामाजिक एवं सांस्कृतिक जीवन में ग्रंथालयों को उनके योगदान के कारण अत्यन्त महत्वपूर्ण माना जाता है।

(घ) ग्रंथालय सामाजिक सामंजस्य की सुविधाएँ प्रदान करता है

ग्रंथालय सामाजिक संस्था के रूप में उपयोगकर्ताओं में आपसी सम्पर्क स्थापित करने की सुविधा प्रदान करता है। व्याख्यान, सामूहिक विचार-विमर्श, सामाजिक प्रकरणों पर चर्चा एवं गोष्ठी, प्रदर्शनी एवं अन्य सामाजिक गतिविधियों के द्वारा उपयोगकर्ताओं में आपसी सम्पर्क स्थापित करवाता है। ग्रंथालय समाज में पारस्परिक मेल मुलाकात के अवसर प्रदान करता है और ऐसे आयोजन में समाज के सभी वर्गो को एकसमान अवसर प्रदान करता है।

(च) ग्रंथालय ज्ञान-संरक्षण करता है

ग्रंथालय पुरालेखों और दुलर्भ प्रलेखों का संरक्षण साहित्यिक विरासत के रूप में भावी पीढ़ी के लिए करता है। यह मानवता के साहित्यिक अवशेषों को विभिन्न भौतिक रूप में अनुसंधान के लिए संकलित रखता है। इस प्रकार के संकलन अनुसंधान के ऐतिहासिक पहलू की विवेचना में सहायक होते हैं।

1.3.2 शिक्षा में ग्रंथालय की भूमिका

व्यक्ति की शिक्षा तथा प्रशिक्षण को आर्थिक सामाजिक विकास के लिए एक अनिवार्य साधन के रूप में माना जाता है। लोगों को प्रबुद्ध और सुसंस्कृत बनाने के लिए समाज में अच्छी शिक्षा प्रणाली आवश्यक है। ग्रंथालय के अभाव में न तो अच्छे विद्यालय, महाविद्यालय और विश्व विद्यालय हो सकते है और न ही प्रौढ़ व्यक्तियों की जीवन-शिक्षा को प्रोत्साहित किया जा सकता है। ऐसा माना जाता है कि जहाँ औपचारिक शिक्षा समाप्त होती है वहाँ अनौपचारिक शिक्षा आरम्भ होती है। जीवनपर्यन्त अध्ययन प्रक्रिया की निरंतरता के लिए उपयुक्त एवं प्रचुर संख्या में ग्रंथालय सेवाओं की आवश्यकता होती है।

(क) ग्रंथालय लोक विश्वविद्यालयों का कार्य करते हैं

ज्ञान प्रदान करने, व्यक्तियों को प्रबुद्ध बनाने और कार्य कुशलता को उन्नत करना ही शिक्षा का लक्ष्य होता है। जिससे मानवों का विकास हो सके और वे समाज और संगठनों की

टिप्पणी

प्रगति की चुनौतियों का सामना कर सकें। ग्रंथालयों को इस प्रकार के प्रयासों के लिए मुख्य आधार माना जाता है इन्हें ''लोक विश्वविद्यालय'' कहा जाता है।

(ख) ग्रंथालय जन शिक्षा का केन्द्र

किसी देश के भावी विकास के लिए राजनीतिक जागरूकता, सामाजिक आर्थिक विकास, सांस्कृतिक एवं शैक्षिक प्रबुद्धता में ग्रंथालय की समान्यत: तथा सार्वजनिक ग्रन्थालय की विशेष रूप से बड़ी महत्वपूर्ण भूमिका होती है। सभी वर्ग के लोगों को बिना किसी भेदभाव के अपनी सेवाएँ उपलब्ध कराके ग्रंथालय बौद्धिक उत्प्रेरक का कार्य करते हैं क्योंकि ग्रंथालयों से ही ज्ञानार्जन, शिक्षा, सूचना, मनोरंजनात्मक-सौंदर्यशास्त्रीय मूल्यांकन तथा अनुसंधान की सभी सुविधाएँ बिना लिंग, आयु के भेदभाव के समाज के कल्याण के लिए प्रदान की जाती हैं

(ग) सतत् शिक्षा के केन्द्र के रूप में ग्रंथालय

लोग अपनी पढ़ने की आदत को बनाए रखने के लिए अपनी प्रवृत्ति, क्षमता तथा अपनी आवश्यकतानुसार ग्रन्थालयों की सहायता प्राप्त करते हैं। लाखों लोगों को ये सतत् शिक्षा केन्द्र के रूप में व्यावसायिक और कार्मिक ज्ञान कौशल को विकसित करने की सुविधा प्रदान करते हैं। जिससे वे अपनी व्यक्तिगत एवं सामुदायिक समस्याओं का समाधान कर सकें। ग्रंथालय व्यक्ति को अनौपचारिक शिक्षा की जीवनपर्यन्त सुविधा प्रदान करता है। नव साक्षरों के लिए भी इसी प्रकार की सुविधा ग्रन्थालयों से प्राप्त होती है।

गतिविधि 1.2 : ग्रंथालय कार्मिकों और छात्रों में पारस्परिक संपर्क होना अति आवश्यक है जिसमें उन्हें यह अनुभव हो सके कि ग्रंथालय सेवाओं का लाभ उठाने से शैक्षणिक लोगों का शैक्षणिक स्तर विकसित होता है। अत: शिक्षार्थी किसी शैक्षणिक ग्रंथालय जाकर वहाँ छात्रों तथा ग्रंथालय कार्मिकों से पारस्परिक सम्पर्क करें।

पाठगत प्रश्न 1.3

रिक्त स्थानों की पूर्ति करें :

1. ग्रंथालय व्यक्तियों के .....में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है।
   (क) व्यक्तित्व विकास
   (ख) भौतिक दिखावट
   (ग) शैक्षणिक विकास
   (घ) वृद्धावस्था
2. लोगों द्वारा ग्रंथालय का उपयोग उन्हें समाज में बनाता है।
   (क) जागरूक नागरिक

टिप्पणी

(ख) प्रबुद्ध नागरिक

(ग) राजनीतिज्ञ

(घ) प्रबंधक

अब हम सूचना युग में बदलते परिवेश में ग्रंथालयाध्यक्षों की चर्चा करेंगे।

1.4 सूचना युग के ग्रंथालय

समाज स्थिर नहीं बल्कि परिवर्तनशील हैं। ग्रंथालय एक सामाजिक संस्था है। सामाजिक परिवर्तन से ग्रंथालय की भूमिका भी प्रभावित होती है। वर्तमान समाज में प्राय: सभी क्षेत्रों में परिवर्तन हो रहे है। इन परिवर्तनों के लिए कई कारण ज़िम्मेदार है। ये कारण है:-

- समाज में राजनैतिक और सामाजिक स्थिरता
- शैक्षिक सुविधाओं का विस्तार और साक्षरता में वृद्धि
- राष्ट्रीय, क्षेत्रीय तथा स्थानीय सामाजिक-सांस्कृतिक परंपराएँ
- प्रवजन के कारण जनसंख्या का शहरीकरण व वैश्वीकरण
- व्यापार और वाणिज्य तथा उद्योग और व्यवसायों में वृद्धि
- राष्ट्रीय स्थानीय और राज्य सरकारों द्वारा प्रोत्साहन
- उच्च जीवन स्तर
- विभिन्न क्षेत्रों में नेताओं और व्यक्तियों का प्रभाव
- सुस्थापित पुस्तक व्यापार
- जनसंचार
- कम्प्यूटर और सूचना प्रौद्यौगिकी

इन सामाजिक राजनीतिक और आर्थिक परिस्थितियों ने ग्रंथालयों के विकास के सभी पहलुओं पर बड़ा प्रभाव डाला है। ये ग्रंथालयों के पारंपरिक क्रियाकलापों के परिवर्तन में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। ये अपने उपयोगकर्ताओं के लिए प्रलेख ही नहीं प्रदान करते बल्कि उनके लिए बहुमाध्यम के सकंलन भी प्रदान करते है। आधुनिक ग्रंथालयों के मूल कार्यो में परिवर्तन आये है जैसे सकंलन, प्रसंस्करण, पुन: प्राप्ति, प्रसार और सूचना की उपयोगिता उपयोगकर्ताओं की नई एवं जटिल माँगों की पूर्ति के लिए ग्रंथालय विभिन्न प्रकार की गतिविधियाँ करता है। सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यम से प्रलेख सूचनाओं का विश्लेषण और उनका पैकेज एवं रिपैकेज जैसे कार्यो को करना सम्भव हो गया है।

ग्रंथालय एक संस्था के रूप में माना जाता है। कम्प्यूटर, संचार, सूचना और नेटवर्किंग, प्रौद्योगिकी के आगमन ने ग्रंथालयाध्यक्षों के समक्ष बड़ी चुनौतियाँ प्रस्तुत की हैं। दक्ष सेवाओं को प्रदान करना व उपलब्ध संसाधनों का प्रभावपूर्ण ढंग से उपयोगकर्ताओं द्वारा उपयोग करने में सहायता देने के लिए ग्रंथालयाध्यक्ष को इन चुनौतियों को स्वीकार करना होगा। इन परिवर्तनों से निपटने, इनके लाभ लेने व उन्हें अपनाने के लिए तैयार होना पड़ेगा।

टिप्पणी

पाठगत प्रश्न 1.4

रिक्त स्थानों की पूर्ति करें :

1. वर्तमान.....में आधुनिक प्राद्योगिकी के कारण परिवर्तन हो रहे हैं।
2. उपयोगकर्ताओं की नई एवं जटिल माँगों की पूर्ति.....के प्रयोग द्वारा पूरी की जाती है।
3. ग्रंथालय को एक.....संस्था के रूप में माना जाता है।

आपने क्या सीखा

- ग्रंथालय समाज के आम नागरिक के सामाजिक, शैक्षिक स्तर के विकास में प्रमुख भूमिका निभाता है।
- ग्रंथालय मानव की अनुसंधान, सांस्कृतिक, मनोरंजन आध्यात्मिक और वैचारिक गतिविधियों के प्रोत्साहन में सहायता करते हैं। इससे राष्ट्रनिर्माण के कार्यक्रमों में सहायता मिलती है।
- ग्रंथालय उपयोगकर्ता के लिए ज्ञान भण्डार के रूप में स्वयं में मूल्य निर्माण करता है।
- समाज में तेज़ी से परिवर्तन हो रहे है जिसका असर ग्रंथालयों पर भी पड़ रहा है।
- आधुनिक सूचना संचरण और नेटवर्किंग प्रौद्योगिकी ने ग्रंथालय के कार्यों में पूर्णत: परिवर्तन किया है।

पाठांत प्रश्न

1. ग्रंथालय की आवश्यकता के बारे में लिखिए।
2. समाज पर ग्रंथालय की सेवाओं का क्या निहितार्थ है।
3. ''ज्ञान ही शक्ति है'' इस वक्तव्य की व्याख्या ग्रंथालयों के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कीजिए।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

1.1

1. सामाजिक संस्था
2. मानव विचार

टिप्पणी

1.2

(1) असत्य

(2) सत्य

(3) सत्य

1.3

(1) (ग)

(2) (ख)

1.4

(1) ग्रंथालय

(2) सूचना प्रौद्योगिकी

(3) सेवा

शब्द

इस पाठ में प्रयुक्त शब्द जिनको और व्याख्या की आवश्यकता है वे नीचे दिये गए हैं। शिक्षार्थियों से अपेक्षा है कि वे इनकी व्याख्या करें।

ध्वनिशास्त्र :

पुरातत्वविषयक :

सौंदर्य :

उत्प्रेरक :

विद्वान :

सूक्ष्म फिल्म/माइक्रोफिल्म :

फोनो रिकार्ड :

भण्डार :